E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डॉ. लक्ष्मण सहाय की रंगमंचीय अलोचना दृष्टि

रागिनी शर्मा

शोध छात्रा, माधव महाविद्यालय

ग्वालियर म.प्र.

Paper Rcevied date

05/09/2025

Paper date Publishing Date

10/09/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17220064

IMPACT FACTOR

5.924

शोध- प्रपत्र

डॉ. लक्ष्मण सहाय ने ग्वालियर के कला प्रेमी राजा मानसिंह के नगर ग्वालियर में रहकर आलोचना विद्या को नयी दिशा प्रदान की, वे आजीवन मौलिक लेखन करते रहे, और मौलिक बौद्धिकता के लिए संघर्ष करते रहे। निबंध, काव्य और अन्य विधाओं का उन्होंने आलोचनात्मक लेखन किया परन्तु मुख्यतः उन्हे ख्याति रंगमंचीय आलोचना के क्षेत्र में प्राप्त हुयी, नाट्य आलोचना विषयक उनके विभिन्न शोधालेख नाट्य समीक्षा की विविध पत्रिकाओ में छपते रहे है। उन्हीं शोधपत्रों एक संकलन 'रंगकर्म और नाटककार' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुई है। रंगमंच और नाट्यकर्म को लेकर डॉ. लक्ष्मण सहाय ने शोधात्मक तथ्य प्रस्तुत किये हैं।

"उन्होंने (भरत मुनि) ऋग्वेद से पाठ अंश लिया सामवेद से गीत का अंश, यजुर्वेद से अभिनय अथर्ववेद से रसों संग्रह किया।" (1)

डॉ. सहाय की नाट्यकर्म विषयक आलोचनात्मक दृष्टि दो प्रकार की है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक इनकी सैद्धांतिक आलोचना, नाट्य लेखन और रंगकर्म के प्रति आबद्ध है। तो दूसरे प्रकार की व्यावहारिक आलोचना में डॉ. सहाय ने विभिन्न नाटककारों के नाटकों का नाटकों के सैद्धांतिक और आलोचनात्मक अध्ययन किया है। वस्तुतः व्यावहारिक पक्ष की आलोचना का मूल आधार आचार्य भरत कृत नाटयशास्त्र है, जिसे विद्वानों ने पंचम वेद की संज्ञा दी है। डॉ. सहाय ने नाटयशास्त्र को आधार मानकर ही अपनी नाटय आलोचना को परिणिति प्रदान की है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डॉ. सहाय ग्वालियर के निवासी थे, इसलिए उन्होंने अपनी मातृभूमि के प्रति निष्ठा प्रस्तुत करते हुए ग्वालियर अंचल के रंग कर्म को प्रधानता दी, यह लेखक की अपनी जन्म भूमि के प्रति प्रेम को दर्शाता है।

जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द के नाटक मानसिंह कालीन बरई का मुक्ताकाशी मंच को अपनी दृष्टि से देखना, ग्वालियर के रंगमंच और रंगकर्म परम्परा को विश्लेषित करना तथा ग्वालियर के महाराज मानसिंह तोमर काल के रंगमंच को उद्घाटित करना डॉ. सहाय की अपनी विशेषताएँ है। इन्हीं आधारो पर डॉ. सहाय को आलोचनात्मक की दृष्टि से परखा जा सकता है।

सैद्धांतिक पक्षः इसके अन्तर्गत नाट्य तत्व यात्राः प्रकृति से वेद और वेद से नाट्यशास्त्र तक त्रिआयामी नाटक में नाटककार और नाट्यलेख, नाट्य-समीक्षा, रंग-संकेत का नाट्यलेख और मंच -प्रदर्शन में महत्व, नाट्य-प्रदर्शन में रंगदीपन का अवदान आदि अन्य सैद्धांतिक पक्ष का आलोचनात्मक मूल्यांक डॉ. सहाय द्वारा संपादित की गई है।

लक्ष्मण सहाय द्वारा नाट्य आलोचना में सैद्धांतिक एवं व्यवाहारिक पक्ष के अतिरिक्त लोक नाट्य को भी अपनी आलोचना का विषय बनाया, लोक नाट्य के स्वरूप का वर्णन करते हुए डॉ. सहाय लिखते हैं- आबद्ध किया गया तो वे लोक नाट्य न रहकर शिष्ट नाटक हो जाएगें और उन नाटकों में फिर लोकपन नहीं रहेगा ।

"ग्राम जीवन में योग्य प्रशिक्षित रंग-निर्देशक भी नहीं पाये जाते हैं। ऐसे निर्देशक गाँव की अपेक्षा उन्नति प्रगति और विकास की सम्भावनाओं के कारण नगर में रहना, रंग निर्देशन करना, उचित समझते हैं। इसलिए वे नगर एवं महानगरों में स्थायी रूप से निवास करते हैं। निर्देशक समान गाँव में प्रायः कुशल अभिनेता भी नहीं होते है। अभिनेत्रियों के मिलने कारण का प्रश्न ही नहीं उठता। कारण यह है कि ग्राम वासी उतने आधुनिक और रीति-नीति परम्परा भंजक नहीं हैं, चाहे उनमें स्वतन्त्रता के उपरान्त कितना ही विकास क्यों न हो गया है। इसके बाद भी उनके रक्त में जमी परम्परावादी विचारधारा को आकाश से तारे तोड़ने की इच्छा करने के समान ही है । " (2)

ग्रामीण जन-जीवन के परिवेश को डॉ. सहाय ने लोकनाट्यों के आधार पर विश्लेषित किया है। परन्तु जो शास्त्रीय नाट्क है, या नाट्य परम्परा है, उसके शास्त्रीय पक्ष को भी उन्होंने उद्घाटित किया है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भरत के रस सूत्र -

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी संयोग रस भाव निष्पतिः के अनुसार रस की जो निष्पति होती है। इस पर ही समूचे रस सिद्धांत का महल बड़ा हुआ है। यहाँ कालान्तर में दण्डी, भामह, रुद्रक एवं रूयैक आदि काव्यशास्त्रीयों ने यह प्रश्न उपस्थित कैसे किया कि रस निष्पति कैसे होती है ? क्या प्रेक्षा को भी उसी भाव का अनुभव होता है । जिस दृश्य मंचन किया जा रहा है, और यदि दर्शक उस भाव को आत्मसात कर रहा है, तो क्या पात्र भी उस दशा को प्राप्त कर लेता है। डॉ. लक्ष्मण सहाय ने अपने आलेख त्रि-आयामी नाटक में नाटककार का परकाया प्रवेश में इस तथ्य पर गंभीरता से चितंन किया है। वे लिखते है कि "भरतमुनि ने नाटक को वस्तु नेता और रस तत्व के माध्यम के कारण त्रि-आयामी कहा है।"

उन्होंने इन्हीं तीनों में नाटककार के परकाया प्रवेश को विश्लेषित करते हुए लिखा है। " नाटककार कहाँ, किस प्रकार की ध्वनि, गायन, नृत्य एवं संगीत का किस स्थान पर प्रयुक्त करना उचित समझता है, वह उनके प्रयोग का संकेत करता है । फलतः रंग- मंचन के समय नाटककार के अनुसार ध्वनि, संगीत का गायन, नृत्य समावेश निर्देशक ध्वनि,संगीत, नृत्य अभिकल्पकों से उनको कराता है। यह सब नाटककार के अनुसार ही होता है- संप्रयोजन और सरंजक नाटककार नाटक के लेखन- प्रदर्शन तक प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में परकाया प्रवेश क्रिया की सिद्धि से उपस्थित रहता है, और उसकी यह उपस्थिति ही नाट्य मंचन में संगीत की अनिवार्यता, हिन्दी नाटक और रंगमंच: एक यात्रा आदि निबंध लेखक की नाट्य आलोचना सैद्धांतिक पक्ष को स्पष्ट करते हैं ।

डॉ. सहाय का मानना है कि नाटकों के तत्व प्रकृति जन्य है। प्रकृति से उनका आगमन वेदों में हुआ और वेद से ही भरतमुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में समाहित किया आचार्य भरत ने केवल प्रदान वेद तत्व को ही मान्यता प्रदान नहीं की अपितु लोक एवं लोकधर्मता को भी उन्होंने प्राथमिकता भी दी है-

"लोकधर्मो भक्त्वेन्याट्यधर्मो तथापरा ।

स्वाभावों लोकधर्मो तु विभावो नाट्य वेद हि । । (3)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डॉ. सहाय मान्यता प्रदान करते और इसी से प्रेरित होकर इन्होंने लोक - नाट्य के विश्लेषण को भी अपने अध्ययन का विषय बनाया है। हिन्दीभाषी प्रांतो में ग्रामीण रंगमंच, लोक-नाटय जात्रा तथा हासिये के बाहर खोइया लोकनाट्य जैसे आलोचनात्मक निबंधों की सृष्टि की सच तो यह है कि लोक के आभाव में नगर नाटको की संकल्पना नहीं की जा सकती है।

लोक का सीधा संबन्ध प्रकृति से है। डॉ. सहाय लिखते हैं कि आदिम प्रकृति तदयुगीन मानव द्वारा सप्रेक्षित बोलचाल अभिनय, आंगिक, भंगिमा, उत्पन्न ध्वनि, संगीत और अव्यवस्थित स्वर से कड़वे, चिरपिरे, नुनखरे रस को उस समय के मानव ने ऋचाओं में अभिव्यक्त किया है।

" नाटककार नाटक के लेखन-प्रदर्शन तक प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में परकाया - पवेश-क्रिया की सिद्धि से उपस्थित रहता है और उसकी यह उपस्थिति ही नाटक के प्रदर्शन द्वारा प्रेक्षक अर्थात् रसभोक्ता का रसार्द्र करती है तथा प्रयोजन की पृष्टि भी करती है। (4)

नाट्य प्रदर्शन में रंग दीपन का अवदान विशिष्ट महत्व रखता है। रंगमंच पर उचित समय पर उचित प्रकाश का व्यवस्थापन भावों को उद्दीप्त करता है। रंगो का कम या अधिक करना समूचे रंगमंच के प्रवेश कर के व्याख्यायित कर देता है। डॉ. सहाय लिखते हैं-

"रंगदीपन अभिकल्पक का रंगलोक के राजदीपन प्रति महत्वपूर्ण दायित्व है- अभिनेता और पृष्ठभूमि के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना । वह अभिनेता या वस्तु - विशेष पर प्रकाश डालकर उन्हें विशेष और महत्वपूर्ण संप्रयोजक बनाता है। अभिनेता की भाव-भंगिमायों की सूक्ष्मताओं को प्रेषक तक पहुचाने का कार्य-निष्पादन अभिकल्पक रंगलोक के माध्यम से ही करता है। इससे वह प्रकाश और अंधकार को सन्तुलित करता है। "इन सभी आवश्यकताओं, उपयोगिताओं तथा प्रभावोत्पादकताओं के कारण नाट्य-प्रदर्शन में रंगदीपन की विशेष आवश्यकता पड़ने लगती है, और वह भी विविध वर्णी में है । (5)

लक्ष्मण सहाय की व्यवहारिक आलोचना दृष्टि रंगमंच सैद्धतिक आलोचना के साथ-साथ सहाय नाटक के व्यावहारिक पक्ष पर भी दृष्टिपात किया है । व्यावहारिक आलोचना के अन्तर्गत इन्होने 'मिलिन्द का नाटक ' 'प्रताप प्रतिज्ञा' : मेरी दुष्टि में, रामकुमार वर्मा के अन्तर्गत नाट्य साहित्य में सांस्कृतिक स्वरूप, लक्ष्मी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नारायण लाल के नाटको में, भारतीयता, हबीब तनवीर और दो लोक कथाश्रित नाटक, दयाप्रकाश सिन्हा के नाट्य साहित्य में दृश्यबंध के लिए, युध्द की अनिवार्यता का दास्तावेज- 'रक्त अभिषेक' आदि लेखों में इनकी व्यवहारिक आलोचना परिलक्षित होती है । व्यवहारिक आलोचना के मापदण्डों को ये निबंध आति पूर्ण करते हैं। अपने व्यावहारिक निबंधों में पहले संबंधित नाटक अथवा नाटककार संक्षिप्त परिचित देते है। फिर उनके प्रदेय को रेखांकित करते हैं। " हबीब तनबीर ने देहांगो की क्रिया-प्रतिक्रिया के अनुरूप ही रंग-संकेत प्रस्तुत किये हैं, जिनसे निर्देशक का अभिनय - क्षेत्र में मार्ग प्रशस्त होता है।" विवेच्य नाटक के रंग-संकेत अभिनेता की मनः स्थिति का बोध करते हैं तथा अभिनेता को आंगिक, भंगिमायें करने में सहयोगी है।

"नाटक का शिल्प - गठन संवेदना एवं कथानुरूप तथा पात्रानुसार है,सशक्त है। अपनी इसी गुण और विशेषता के कारण यह नाटक अनेकशः बार-बार मंच पर खेला जा सका है और वर्तमान, भविष्य में भी मंचित किया जा सकता है। इस नाटक में पंजीयक और अनाज लेने वाली भीड़ के अतिरिक्त मूल पात्र सोलह है, जिनमें चौदह पुरुष पात्र और दो नारी पात्र हैं। वर्तमान में भीड़ दिखाने के दृश्य आसान हो गये है, इसलिए प्रदर्शन में अनाज लेने के लिए उमड़ी भीड को प्रदर्शित किया जा सकता (6)

नाटकों की कथावस्तु, सामाजिक, राजनैतिक, व्यंगात्मक, धार्मिक पौराणिक एवं ऐतिहासिक कोई भी हो सकती है। नाटक की प्रकृति जैसी होती है उसके सहजीकरण के लिए भाषा का होना आवश्यक है। डॉ. सहाय नाटककार के नाटकों के विधानों को मौलिक दृष्टि से उद्घाटित करते है। हबीब तनवीर के नाटक 'बाहदुर कलारिन के विश्लेषण का एक दृश्य' "बहादुर कलारिन नाटक में बीस पात्र है, जिनमें बारह पुरुष और आठ महिला पात्र है। इस लोक-कथाश्रित नाटक में लोकगीत-संगीत और नृत्य मनमोहक सामंजस्य है। हबीब तनवीर ने लोककथा को कल्पना माध्यम से इस दृश्यों में नियोजित किया है। उन्होंने अंक और उसके दृश्यों के सिद्धांत का प्रयोग - विन्यास में नहीं किया है। (7)

पुरानी परिपाटी अंक - दृश्य को तोड़कर नये दृश्य-सिद्धान्त का अनुगमन किया है। हबीब तनवीर नाटक को प्रभावशाली और हृदयग्राही बनाने के लिए नित नये प्रयोग, नये सिद्धान्तों की खोज करते रहे हैं, जैसा उनके समकालीन नाटककार करते रहे है। नाट्य - कथा के विकास पात्रों की मनोदशा, अंग भंगिमा के संचालक उनके सम्वाद छोटे होने पर भी प्रेक्षक को झकझोरने, गुदगुदाने, भाव विभोर करने और सोच विचार कराने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वाले हैं। नाटक की भाषा संवादों को असीम क्षमता और ऊर्जा प्रदान करती है । सम्पूर्ण नाटक की भाषा छत्तीसगढ़ी है। नाटककार ने 'बहादुर कलारिन' के माध्यम से छत्तीसगढ़ी भाषा से सम्पूर्ण देश-विदेश को परिचित करा दिया है। इसमें लोकभाषा का अनुपम प्रयोग है। नाटक के रंग-संकेत अभिनेताओं की मनोदशा और मनोदशानुरूप अंग संचालन को दिशा प्रदान करते हैं ।

निष्कर्ष -

डॉ. लक्ष्मण सहाय ऐसे समालोचक रहे हैं, जिनका रंगमंच और नाटक के प्रति नवोन्मेष रहा है। डॉ. सहाय ने नाटकीय आलोचना में नये-नये प्रयोग किये हैं। आलोचना के दोनों पक्षो सैद्धांतिक और व्यावहारिक को इन्होंने गहराई से हृदयांग्य किया है। नाटकीय आलोचना के क्षेत्र में इनका कार्य अप्रतिम है। इसके अतिरिक्त आपने हिन्दी नाट्य साहित्य में लोक - नाट्य की भूमिका का भी निर्धारण किया है।

संदर्भ सूची

1. आचार्य हजारीप्रसाद, ग्रंथावली - भारतीय नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा,भाग - 5, पृ. 313.
2. डॉ. लक्ष्मण सहाय, रंगकर्म और नाटककार तरूण प्रकाशन डी - ब्लॉक इन्द्रापुरी कॉलोनी गाजियाबाद संस्करण 2015, पृ. 114.
3. भरत मुनि, नाट्यशास्त्र, पृ. 203.
4. वहीं, पृ. 25.
5. वहीं, पृ. 55.
6. वहीं, पृ. 166.
7. वहीं, पृ. 167-168.